

वैदेशिक रोजगारः स्थितिपत्र

नेपालमा श्रमको अवस्था

नेपालमा प्रतिवर्ष साडे ५ लाख युवाहरू श्रम बजारमा प्रवेश गर्ने गरेको सरकारी अध्ययनले देखाएका छन्। आर्थिक वर्ष २०७२/७३ को आर्थिक सर्वेक्षण अनुसार ५ लाख ४० हजारको हाराहारीमा युवाहरू श्रम बजारमा प्रवेश गर्ने गरेका छन्। लोकसेवा आयोगले आर्थिक वर्ष ०७३/७४ का लागि खोलेको परीक्षामा मात्रै ५ लाख ९५ हजार ३१ जनाको आवेदन परेको थियो। यस आँकलनअनुसार श्रम बजारमा प्रवेश गर्ने संख्या सरकारी अनुमान भन्दा निकै बढी अर्थात् साडे ६ लाखभन्दा बढी नै देखिन्छ। श्रम बजारमा प्रवेश गर्नेमध्ये भन्डै ५० हजारले मात्र आन्तरिक रूपमा रोजगारी पाउँछन्।

वैदेशिक रोजगारी

नेपालमा वैदेशिक रोजगारी कहिलेबाट औपचारिक रूपमा आरम्भ भयो भन्ने आधिकारिक विवरण छैन। केही अध्येताहरूले पहिलो विश्वयुद्ध (सन् १९४१) देखि नेपालीहरू वैदेशिक सुरु गरेको उल्लेख गरेका भए पनि त्यसभन्दा पूर्व नै नेपालीहरू भारतमा पुगेर त्यहाँ काम गर्न थालेको पाइन्छ। नेपालबाट कामका लागि विदेश जाने प्रचलन करिब दुई सय वर्षअघि (पहिलो विश्वयुद्धपछि) नै शुरु भए पनि २०४२ सालमा वैदेशिक रोजगार ऐन आएपछि यसले संस्थागत रूप लिएको हो। विशेषगरी पछिल्ला केही वर्षहरूमा देशमा ठूला ठूला राजनीतिक परिवर्तन भए, तर तुलनात्मक रूपमा आर्थिक क्रियाकलापहरू बढन सकेनन्। देशभित्र रोजगारीका अवसरहरू सिर्जना हुन नसकेपछि वैदेशिक रोजगारीलाई बाध्यात्मक विकल्पको रूपमा लिने क्रम बढ्दो छ। प्रत्येक वर्ष पाँच लाखभन्दा बढी नेपाली महिला तथा पुरुष भारत बाहेकका देश मुख्यतया मध्यपूर्वमा काम गर्न जान्छन्। पुरुषहरू छोटो अवधिको सम्भौता र थोरै ज्याला पाइने उद्योग जस्तो उत्पादन तथा निर्माणमूलक क्षेत्रमा र महिलाहरू घरेलु काम गर्दछन्। पछिल्लो जनगणनाअनुसार (सन् २०११) अनुपस्थित जनसङ्ख्या (१,९२१,४९४) वा नेपालभन्दा बाहिर रहेका व्यक्तिहरू (भारतमा बसोबास गरिरहेका समेत) को करिब कुल ७१ प्रतिशतले विदेशमा निजी तथा संस्थागत कामहरूका लागि देश छोड्ने गरेको उल्लेख छ। अन्तर्राष्ट्रिय श्रम बजारमा नेपाली श्रमिकहरूको ठूलो माग रहेको छ। हालैका वर्षहरूमा नेपालबाट खासगरी खाडी सहायता परिषद देशहरू र मलेसिया जाने श्रम आप्रवासीहरूको सङ्ख्यामा वृद्धि भएको कुरा आप्रवासनसम्बन्धी विश्लेषणमा बारम्बार देखा पर्ने गरेको छ।

हालसम्म कर्ति जना वैदेशिक रोजगारीमा छन् वास्तविक तथ्यांक सरकारसँग छैन। यद्यपि आर्थिक वर्ष २०६३/६४ देखि मात्रै वैदेशिक रोजगार विभागमा सफ्टवेयर प्रयोग गरी तथ्यांक राख्न सुरु गरेकाले त्यसभन्दा पहिला वैदेशिक रोजगारमा गएका कामदारको लैङ्गिक संख्या छुट्याउन सकेको छैन। यस्तै वैदेशिक रोजगारीमा जानेको व्यक्तिगत विवरण समेत सरकारसँग छैन। केही दशक अधिसम्म वैदेशिक रोजगारमा जाने नेपालीहरूको प्रमुख गन्तव्य भारत रहेकोमा हालका वर्षहरूमा उक्त प्रवृत्तिमा व्यापक परिवर्तन आएको देखिन्छ। स्थलगत सर्वेक्षणले भारतमा कामको खोजीमा जाने नेपालीको संख्या ४.४ प्रतिशत मात्र रहेकोले नेपाली कामदारहरूको लागि भारत कम आकर्षक गन्तव्य मुलुकको रूपमा देखिएको छ। वैदेशिक रोजगारमा गएका मध्ये आधाभन्दा बढी अर्थात् ५६.९ प्रतिशत साउदी अरब, दुबई, कतार लगायतका खाडी मुलुकमा जाने गरेको देखिन्छ। खाडी राष्ट्रहरूपछि नेपाली कामदारको दोस्रो ठूलो गन्तव्यको रूपमा मलेसियामा रहेको छ। मलेसियामा २६.६ प्रतिशत नेपाली कामदारहरू कामको खोजीमा

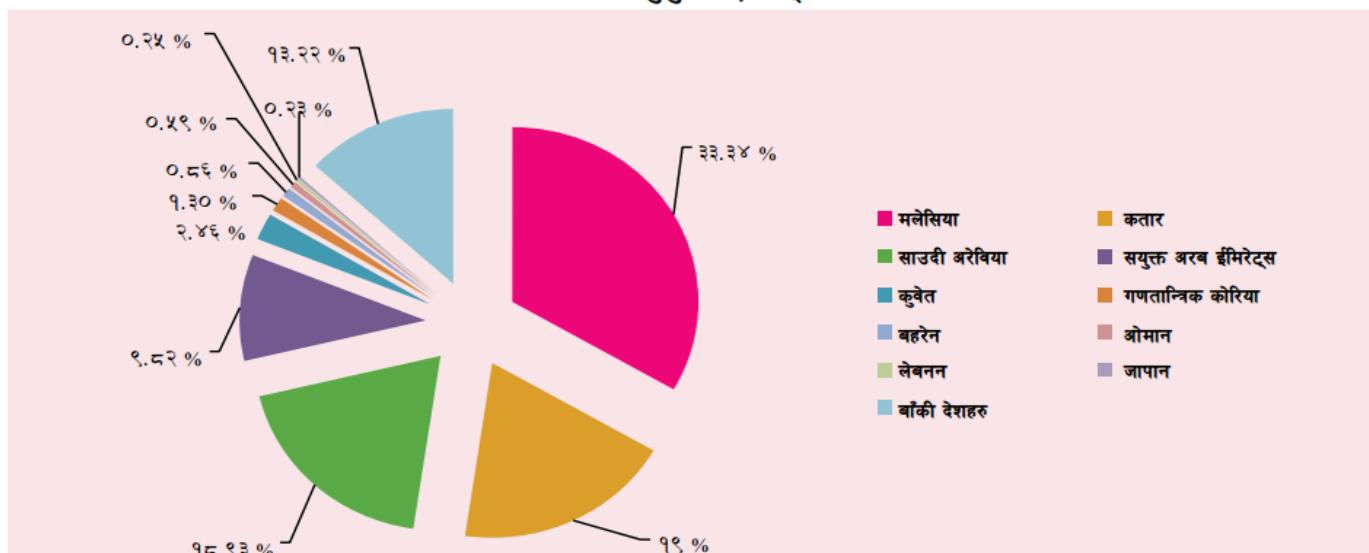
गएको देखिन्छ । त्यसैगरी, अमेरिका, वेलायत, इजरायल, जापान तथा सिङ्गापुर लागायतका विकसित मुलुकहरूमा रोजगारीको लागि जाने संख्या जम्मा ८.१ प्रतिशत रहेको छ ।

आर्थिक वर्ष २०५०/५१ मा कतार, साउदीअरब, यूएई, कुवेत, बहराईन, हड्कड, ओमन र अन्य गरि ३६ सय ५ जना वैदेशिक रोजगारीका लागि गएको विवरणमात्र सरकारसँग छ, जसमध्ये सबैभन्दा धेरै साउदीअरब पुगेका थिए ।

पहिलो आर्थिक वर्ष २०५०/५१ वर्ष वैदेशिक रोजगारीमा जानेहरू

| | | | |
|-----------|-------|-------|------|
| साउदी अरब | २२९०, | कतार | ३९१ |
| कुवेत | ३६१, | युएई | १३२ |
| बहराईन | ९१, | हड्कड | ६३ |
| ओमन | ४३, | अन्य | २३४ |
| जम्मा | | | ३६०५ |

वैदेशिक रोजगारका लागि सबभन्दा उच्च गन्तव्य मुलुकहरू, सन् २००८/०९-२०१४/१५



स्रोत : वैदेशिक रोजगार विभाग

श्रम स्वीकृति लिई वैदेशिक रोजगारमा गएका कामदारहरूको विवरण

| देश | आर्थिक वर्ष २०६३/६४ देखि २०७१/७२ सम्म | | | आर्थिक वर्ष २०७१/७२ | | | आर्थिक वर्ष २०७२/७३ | | |
|------|---------------------------------------|-------|--------|---------------------|-------|-------|---------------------|-------|-------|
| | पुरुष | महिला | जम्मा | पुरुष | महिला | जम्मा | पुरुष | महिला | जम्मा |
| कतार | ८३४८९८ | ७८१९ | ८४२६३७ | १२७५२० | १५१८ | १२९०३ | ९६२३३८ | ९३३७ | ९७९६७ |

| | | | | | | ८ | | | ५ |
|------------------|---------|------------|-------------|------------|-----------|--------|---------|-------------|-------------|
| मलेसिया | १०२९८७६ | २३२२१ | १०५३०९ ७ | ५९३५५ | १६२४ | ६०९७९ | १०८९२३१ | २४८४ ५ | १११४० ७६ |
| साउदी अरब | ६२४४५० | ३०६० | ६२७५१० | १३६९५८ | १५७१ | १३८५२९ | ७६१४०८ | ४६३१ | ७६६०३ ९ |
| युएई | ३७११८८ | ३०२५९ | ४०१४४७ | ४४६४१ | ८१५२ | ५२७९३ | ४१५८२९ | ३८४११ | ४५४२ ४० |
| कुवेत | ६२९९० | ३८०२० | १०१०१० | ९२८६ | ७६३ | १००४९ | ७२२७६ | ३८७८३ | १११०५ ९ |
| बहराईन | ३६८४३ | ३१३० | ३९९७३ | २८२४ | ३२२ | ३१४६ | ३९६६७ | ३४५२ | ४३११९ |
| ओमान | २२२६७ | ३७१३ | २५९८० | २२४३ | ८१६ | ३०५९ | २४५१० | ४५२९ | २९०३९ |
| दक्षिण कोरिया | २६२१७ | १२१३ | २७४३० | ६८५५ | ५७७ | ७४३२ | ३३०७२ | १७९० | ३४८६२ |
| लेवानान् | ११०८ | ११३२० | १२४२८ | ५१ | ११६ | १६७ | ११५९ | ११४३६ | १२५९५ |
| इजरायल | २१३८ | ४१८२ | ६३२० | ८१ | १०८ | १८९ | २२१९ | ४२९० | ६५०९ |
| अफगानस्त ान | ७७५५ | ४० | ७७९५ | १४१७ | २ | १४१९ | ११७२ | ४२ | ९२१४ |
| जपान | १०८८४ | ६७४ | ११५५८ | ३७२५ | ११९ | ३८४४ | १४६०९ | ७९३ | १५४०२ |
| अन्य | ३४९२८ | ९१५५ | ४४०८३ | ४४५० | ३६१९ | ८०६९ | ३९३७८ | १२७७४ | ५२१५२ |
| जम्मा | ३०६५४६२ | १३५८० ६ | ३२०१२६८ | ३९९४० ६ | १९३० ७ | ४१८७१३ | ३४६४८६ | १५५११३ ८ | ३६१९९ ८१ |

स्रोत: वैदेशिक रोजगार विभाग

आप्रवासनसम्बन्धी अवस्था

आप्रवासन सम्बन्धी पछिल्लो औपचारिक तथ्याङ्क नभए पनि विभिन्न संस्थाहरूले गरेको एक अध्ययनानुसार हालसम्म ४६ लाख नेपाली आप्रवासीको रूपमा रहेका छन्। सामान्यतय २ सय ८० दिनभन्दा बढी विदेशमा रहेकालाई आप्रवासीको रूपमा मान्ने गरिन्छ।

| वैदेशिक रोजगार र विदेशमा स्थायी अनुमति पाएका नेपालीहरू कूल जनसंख्याको १० प्रतिशत रहेको एक अध्ययनले देखाएको छ। जसलाई आप्रवासनमा संलग्न रहेको भनिन्छ। | आप्रवासी नेपालीको संख्या |
|---|--------------------------|
| मुलुकको नाम | |
| कतार | ४, ००, ००० |
| संयुक्त अरब इमिरेन्ट्स | २, ००, ००० |
| साउदी अरब | ५, ००, ००० |
| कुवेत | ७०, ००० |
| कोरिया | १७, ००० |
| बहराईन | ३५, ००० |
| ओमान | १२, ००० |

श्रम आप्रवासनका लागि खुला देशहरू

सरकारले वैदेशिक रोजगारीका लागि संसारका ११० मुलुक जान औपचारिक रूपमा अनुमति दिए पनि कामदारहरूको असुरक्षाका कारण हालैका दिनहरूमा भने अफगानिस्तान, इराक र लिबियामा रोक लगाएको छ ।

| क्रम | देश | क्रम | देश | क्रम | देश |
|------|---------------------|------|-------------|------|----------------------|
| १. | अफगानिस्तान | ४१. | हड्गेरी | ८१. | पोल्यान्ड |
| २. | अल्बानिया | ४२. | आईसल्यान्ड | ८२. | पोर्चुगल |
| ३. | अल्जेरिया | ४३. | इन्डोनेसिया | ८३. | कतार |
| ४. | अर्जेन्टिना | ४४. | इरान | ८४. | दक्षिण कोरिया |
| ५. | अर्मानिया | ४५. | इराक | ८५. | स्लोभाकिया |
| ६. | अष्ट्रेलिया | ४६. | आयरल्यान्ड | ८६. | रोमानिया |
| ७. | अष्ट्रिया | ४७. | इजरायल | ८७. | रसिया |
| ८. | अजरवैजान | ४८. | इटली | ८८. | साइप्रस |
| ९. | बहराईन | ४९. | जापान | ८९. | साउदीअरेबिया |
| १०. | बंगलादेश | ५०. | जोर्डन | ९०. | सिङ्गापुर |
| ११. | बेलारुस | ५१. | काजकिस्तान | ९१. | स्लोभानिया |
| १२. | बेल्जियम | ५२. | केन्या | ९२. | साउथ अफ्रिका |
| १३. | बोलिभिया | ५३. | कोसोभो | ९३. | स्पेन |
| १४. | बोस्निया हर्जगोभिना | ५४. | कुवेत | ९४. | श्रीलङ्का |
| १५. | ब्राजिल | ५५. | लाओस | ९५. | स्वीडेन |
| १६. | ब्रानाई | ५६. | लातिभया | ९६. | स्वीजरल्यान्ड |
| १७. | बुल्गारिया | ५७. | लेवन्न | ९७. | चिली |
| १८. | क्यानडा | ५८. | लिविया | ९८. | तान्जानिया |
| १९. | चिली | ५९. | लक्जमवर्ग | ९९. | थाईल्यान्ड |
| २०. | चीन | ६०. | मकाउ | १००. | फिलिपिन्स |
| २१. | कोलम्बिया | ६१. | मलेसिया | १०१. | ट्रियुनिसिया |
| २२. | कम्बोडिया | ६२. | माल्दिभ्स | १०२. | टर्की |
| २३. | कझे | ६३. | माल्टा | १०३. | युगान्डा |
| २४. | कोस्टारिका | ६४. | मेसेडोनिया | १०४. | युक्रेन |
| २५. | क्रोएसिया | ६५. | मेक्सिको | १०५. | संयुक्त अरब इमिरेट्स |
| २६. | क्यूबा | ६६. | माल्दोभा | १०६. | अमेरिका |
| २७. | साइप्रस | ६७. | मंगोलिया | १०७. | उज्बेकिस्तान |
| २८. | चेक रिपब्लिक | ६८. | मोरिसस् | १०८. | भेनेजुयला |
| २९. | डेनमार्क | ६९. | मोरक्को | १०९. | भियतनाम |
| ३०. | इजिप्ट | ७०. | मोजाम्बिक | ११०. | जाम्बिया |
| ३१. | इस्टोनिया | ७१. | म्यानमार | | |

| | | | |
|-----|---------------|-----|---------------|
| ३२. | फिजी | ७२. | नेदरल्यान्ड |
| ३३. | फिनल्यान्ड | ७३. | न्युजिल्यान्ड |
| ३४. | फ्रान्स | ७४. | निकारागुआ |
| ३५. | जर्मनी | ७५. | नाईजेरिया |
| ३६. | ग्रेट ब्रिटेन | ७६. | नर्वे |
| ३७. | गिर्स | ७७. | ओमन |
| ३८. | गुयना | ७८. | पाकिस्तान |
| ३९. | होलिसी | ७९. | पानमा |
| ४०. | हडकड | ८०. | पेरु |

राजनीतिक अस्थिरता र सशस्त्र द्वन्द्वका कारण इराक, अफगानस्तान र लिवियामा कामका लागि जान भने पछिल्लो समय सरकारले रोक लगाएको छ ।

सबभन्दा बढी वैदेशिक रोजगारीमा जाने १० जिल्ला

वैदेशिक रोजगारका दृष्टिकोणले धेरै वैदेशिक रोजगारीमा जाने जिल्लामा धनुषा पहिलो नम्बरमा छ । अधिकांश तराईका जिल्लाहरूबाट वैदेशिक रोजगारीमा धेरै गएका छन् । धनुषाबाट मात्रै २० हजारको हाराहारीमा वार्षिक वैदेशिक रोजगारीमा जाने गरेको वैदेशिक रोजगार विभागको तथ्याङ्कमा उल्लेख छ । धनुषापछि क्रमस : भापा, मोरड, सिराह, महोत्तरी, सप्तरी, सलाही, नवलपरासी, सुनसरी रुपन्देही लगायतका जिल्ला बढी वैदेशि रोजगारीमा जाने जिल्लाको सूचिमा परेका छन् ।

२०७०/०४/०१ देखि २०७१/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|-----------|-------|-------|-------|
| धनुषा | २१४४० | ५२ | २१४९२ |
| भापा | १७५६८ | ११५५ | १८७२३ |
| मोरड | १७१७९ | ७३४ | १७९१७ |
| सिराहा | १७२५८ | १८ | १७२७६ |
| महोत्तरी | १५६५७ | ४६ | १५७०३ |
| सप्तरी | १३४५६ | २५ | १३४८१ |
| सलाही | १३२०१ | १८७ | १३३८८ |
| नवलपरासी | १२७५९ | २७४ | १३०३३ |
| सुनसरी | १२३५७ | ४८० | १२८३७ |
| रुपन्देही | ११५८५ | १६३ | ११७४८ |

स्रोत : वैदेशिक रोजगार विभाग

२०७१/०४/०१ देखि २०७२/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|-----------|-------|-------|-------|
| धनुषा | २२१९३ | ४६ | २२२३९ |
| भापा | १६८३९ | १३२७ | १८१६६ |
| मोरड | १६७७१ | ८५२ | १७६२३ |
| सिराह | १७०३४ | २१ | १७०५५ |
| महोत्तरी | १६६६९ | ५४ | १६७२३ |
| सर्लाही | १४३९२ | २११ | १४६०३ |
| सप्तरी | १३९६७ | ४१ | १४००८ |
| सुनसरी | १२६२८ | ५०२ | १३१३० |
| नवलपरासी | १२४८९ | २७१ | १२७६० |
| रुपन्देही | १२१३४ | १८१ | १२३१५ |

२०७२/०४/०१ देखि २०७३/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|-----------|-------|-------|-------|
| धनुषा | १९८९१ | ५६ | १९९४७ |
| भापा | १४५२२ | ११८६ | १५७०८ |
| महोत्तरी | १५२५३ | ४१ | १५२९४ |
| मोरड | १४४१९ | ७०२ | १५१२१ |
| सिराह | १४४८७ | २५ | १४५१२ |
| सप्तरी | १३३६१ | ४४ | १३४०५ |
| सर्लाही | १२९०९ | २०८ | १३११७ |
| सुनसरी | १०८३० | ३८९ | ११२१९ |
| नवलपरासी | १०४४९ | २४२ | १०६९१ |
| रुपन्देही | ९७३९ | १५८ | ९८९७ |

सबैभन्दा कम वैदेशिक रोजगारीमा जाने १० जिल्लाहरू

आर्थिक वर्ष २०७० देखि २०७३ सम्म सबैभन्दा कम वैदेशिक रोजगारीमा जाने जिल्लाहरूका अवस्था हेर्दा डोल्पा र मुस्ताङ कम वैदेशिक रोजगारीमा जाने जिल्लाको सूचिमा माथिल्लो पंक्तिमा छन् । आर्थिक वर्ष २०७०/७१ मा डोल्पाबाट जम्मा २३ जनामात्र वैदेशिक रोजगारीमा गएका थिए, जस मध्ये १ जना महिला थिइन् । पछिल्लो ३ वर्षको अवधिमा सबैभन्दा कम वैदेशिक रोजगारीमा जाने जिल्लाहरूमा डोल्पा, मुस्ताङ, हुम्ला, मुगु, जुम्ला, बाजुरा, डोटी, बझाड, कालिकोट र अछामबाट कम संख्यामा वैदेशिक रोजगारीमा गएका थिए ।

२०७०/०४/०१ देखि २०७१/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|---------|-------|-------|-------|
| डैल्पा | २२ | १ | २३ |
| मुस्ताड | ४९ | १० | ५९ |
| हुम्ला | ८४ | २ | ८६ |
| मुगु | १४० | ५ | १४५ |
| जुम्ला | २९७ | ० | २९७ |
| बाजुरा | ५२३ | ५ | ५२८ |
| डोटी | ६१५ | १ | ६१६ |
| बझाड | ६७६ | १ | ६७७ |
| कालिकोट | ७२७ | ३ | ७३० |
| अछाम | ७७० | ० | ७७० |

२०७१/०४/०१ देखि २०७२/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|---------|-------|-------|-------|
| डैल्पा | ४७ | २ | ४९ |
| मुस्ताड | ५३ | ८ | ६१ |
| हुम्ला | ७५ | ४ | ७९ |
| मनाड | ७६ | १६ | ९२ |
| मुगु | २५८ | ३ | २६१ |
| जुम्ला | ३८२ | २ | ३८४ |
| बाजुरा | ७३२ | ४ | ७३६ |
| डोटी | ७५१ | ४ | ७५५ |
| कालिकोट | ७९९ | ७ | ८०६ |
| रसुवा | ७४४ | १०६ | ८५० |

२०७२/०४/०१ देखि २०७३/०३/३२ सम्म

| जिल्ला | पुरुष | महिला | जम्मा |
|---------|-------|-------|-------|
| मनाड | ४३ | ५ | ४८ |
| मुस्ताड | ४६ | १२ | ५८ |
| हुम्ला | ७३ | २ | ७५ |
| डैल्पा | ७० | १६ | ८६ |
| मुगु | २०४ | १ | २०५ |
| बझाड | ३१९ | १ | ३२० |
| जुम्ला | ४१९ | ६ | ४२५ |

| | | | |
|---------|-----|---|-----|
| बाजुरा | ४७० | ६ | ४७६ |
| डोटी | ४७१ | ९ | ४८० |
| कालिकोट | ५०७ | ४ | ५११ |

भारतमा रोजगारीमा रहेका नेपालीहरू

भारत जाने नागरिकलाई वैदेशिक रोजगारीको श्रेणीमा नराखिएको र यकिन विवरण समेत सरकारसँग नभएकाले अहिलेसम्म कति नागरिक कामका लागि भारत जाने गरेका छन् भन्ने तथ्याङ्क यकिन छैन । यद्यपी भारतमा २५ लाखको हाराहारीमा त्यहाँ नेपाली कामदार रहेको विभिन्न अनौपचारिक अध्ययनमा उल्लेख छ । विशेषगरी मध्य तथा सुदूरपश्चिमबाट बढी नेपाली मौसमी कामदारका रूपमा भारत जाने गरेका छन् ।

देशगत वैदेशिक रोजगारको अवस्था

आर्थिक वर्ष २०७२/७३ सम्ममा ३६ लाख १९ हजार ९ सय ८१ जना वैदेशिक रोजगारीमा गएका छन् जसमा ३४ लाख ६४ हजार ८ सय ६८ जना पुरुष र १ लाख ५५ हजार १ सय १३ जना महिला छन् । यसैगरि आर्थिक वर्ष २०७३/७४ को पहिलो ८ महिनामा श्रम स्वीकृति लिई वैदेशिक रोजगारीमा जाने कुल संख्या १ लाख ८६ हजार १ सय ६६ मध्ये १ लाख ७६ हजार ८ सय ३१ जना पुरुष र ९ हजार ३ सय ३५ जना महिला छन् ।

| देशको नाम | पुरुष | महिला | जम्मा |
|---------------|----------|-------|----------|
| कतार | ६१,२५५ | १,०१४ | ६२,२६९ |
| मलेसिया | ३७,८४७ | ६१७ | ३८,४६४ |
| साउदी अरब | ४२,४२३ | ७६० | ४३,१८३ |
| युएई | २२,४५९ | ३,७९२ | २६,२५१ |
| कुवेत | ५,३१७ | ३३१ | ५,६४८ |
| बहराइन | १,७८० | १४४ | १,९२४ |
| ओमन | १,०७८ | ३३४ | १,४१२ |
| दक्षिण कोरिया | ४७ | | ४७ |
| लेबनान | ३२ | ४४ | ७६ |
| इजरायल | ३६ | ३६ | ७२ |
| अफगानस्तान | ५३८ | ३ | ५४१ |
| जापान | १,५६७ | ५३ | १,६२० |
| अन्य | २,४५२ | २,२०७ | ४,६५९ |
| जम्मा | १,७६,८३१ | ९,३३५ | १,८६,१६६ |

स्रोत : श्रम तथा रोजगार मन्त्रालय

सीप सिकेर वैदेशिक रोजगारीमा जानेको संख्या

नेपाली श्रम बजारमा रोजगारीको अवसरको कमी, न्यून पारिश्रमिक, श्रमको कदर नगर्ने संस्कार, शिक्षा, सूचना र प्रविधिको विकास तथा युवाहरूमा बढ्दो महत्वकांक्षाले युवाको विदेश जाने क्रम निरन्तर बढ्दो छ । भूकम्प र कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्रको व्यावसायीकरण र औद्योगीकरणको कमीले युवा जनशक्तिका लागि पनि वैदेशिक रोजगारी विकल्प बन्न पुगेको छ ।

संस्थागत रूपमा वैदेशिक रोजगारका लागि १ सय १० मुलुकहरू र व्यक्तिगत प्रयासमा वैदेशिक रोजगारमा जानेहरूका लागि १ सय ६७ भन्दा बढी देशहरू खुला भएका छन् । आन्तरिक रोजगार स्वरोजगारका साथै वैदेशिक रोजगारीका लागि दक्ष एवं सीपयुक्त श्रमशक्ति तयार गर्नका लागि युवा श्रम शक्तिलाई लक्षित गरी सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रबाट आन्तरिक एवं वाहय रोजगार लक्षित व्यावसायिक तथा सीपमूलक तालिम प्रदान गरिएको छ ।

तालिम प्राप्त गरि वैदेशिक रोजगारीमा जाने श्रमशक्ति २४.५ प्रतिशत मात्रै रहेको छ ।

| आर्थिक वर्ष | महिला | पुरुष | जम्मा |
|-------------|-------|-------|-------|
| २०६२/६३ | ३४३२ | ३६३३ | ७०६५ |
| २०६३/६४ | ७४५७ | ६५९६ | १४०५३ |
| २०६४/६५ | ९७९६ | ६४३२ | १६१४८ |
| २०६५/६६ | १२७०२ | ९०३९ | २१७४१ |
| २०६६/६७ | १३३०५ | ९२५७ | २२५६२ |
| २०६७/६८ | १२५३० | ९६०० | २२१३० |
| २०६८/६९ | ८०४५ | ८५०७ | १६५५२ |
| २०६९/७० | ७५८६ | ७५२१ | १५१०७ |
| २०७०/७१ | ८२७८ | ९०५० | १७३२८ |
| २०७१/७२ | ७७५० | ८१२९ | १५८७९ |
| २०७२/७३ | ६९४७ | ९०५४६ | १७४९३ |
| २०७३/७४ | ६९२५ | ६९८५ | १३११० |

पहिलो आठ महिनाको तथ्यांक

(स्रोत : व्यावसायिक तथा सीप विकास तालिम केन्द्र)

वैदेशिक रोजगारी सूचना व्यवस्थापन प्रणालीमा आवद्ध संस्था

| | |
|--|--|
| वैदेशिक रोजगारीमा कामदार पठाउने इजाजतपत्रवाला संस्था दर्ता संख्या | दर्ता भएका : १०४४ सक्रिय : ८९० निष्क्रिय : १५४ |
| वैदेशिक रोजगारीमा जाने कामदारलाई अभिमुखीकरण तालिम दिने संस्था संख्या | जम्मा : १२१ काम गरिरहेका : ११५ बन्द भएका : ६ |
| वैदेशिक रोजगारमा जाने कामदारको स्वास्थ्य परिक्षण गर्ने संस्थाको संख्या | २७८ |
| विद्युतीय प्रणालीमा आवद्ध भएका वैकको संख्या | ८ |

विप्रेषण

नेपालमा वैदेशिक रोजगारीबाट विगत लामो समयदेखि नै विप्रेषण वा रेमिट्यान्स प्राप्त हुने गरे पनि त्यसको अद्यावधिक विवरण भेटिएन। नेपाल राष्ट्र बैंकको २०२० सालदेखिको वासलातमा रेमिट्यान्सको रकम उल्लेख भएको पाइए पनि त्यो बाट्य रेमिट्यान्स हो वा आन्तरिक भन्ने स्पष्ट खुलेको देखिएन। अधिल्लो चार दशकको अवधिमा विप्रेषण आयको आकार न्यून रहेको वैदेशिक रोजगार विभागले जनाएको छ। विगत डेढ दशकको अवधिमा कुल गार्हस्थ्य आयको तुलनामा विप्रेषण आयले उल्लेख्य आकार ग्रहण गरेको मात्र नभई अर्थतन्त्र धान्ते प्रमुख स्रोतको रूपमा देखा परेको छ। आर्थिक वर्ष २०५७/५८ मा औपचारिक माध्यमबाट नेपालमा रु ४७ अर्ब विप्रेषण प्राप्त भएकोमा १५ वर्षको अन्तरालमा यस्तो आय करिव १३ गुणाले उल्लेख्य वृद्धि भई आर्थिक वर्ष २०७१/७२ मा सो रकम रु ६९७ अर्ब पुगेको छ।

- ❖ आर्थिक वर्ष २०५०/५१ मा रु. २ अर्ब १५ करोड
- ❖ आर्थिक वर्ष : २०७२/७३ मा रु ६६५ अर्ब
- ❖ आर्थिक वर्ष ०६३/६४ मा कुल जीडीपी विप्रेषणा अनुपात १३.८ प्रतिशत
- ❖ आर्थिक वर्ष ०७२/७३ मा जीडीपी विप्रेषणा अनुपात २९.६ प्रतिशत

स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक

- ❖ विप्रेषण आप्रवाहको अवस्था

| | २०६९/७० | २०७०/७१ | २०७१/७२ | २०७२/७३ | २०७३/७४ |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|
| विप्रेषण आप्रवाह /रु अर्ब | ४३४.६ | ५४३.३ | ६१७.३ | ६६५.१ | ४५० |
| प्रतिशत परिवर्तन | २०.९ | २५. | १३.६ | ७.७ | ५.३ |
| विप्रेषण कुल गार्हस्थ्य उत्पादन अनुपात | २५.६ | २७.७ | २९. | २९.६ | - |

| | | | | | |
|--|------|------|------|------|--|
| चालू ट्रान्सफर आयमा विप्रेषण आयको अंश | ८७.३ | ८५.६ | ८७.९ | ८५.५ | |
|--|------|------|------|------|--|

श्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक, पहिलो ८ महिना सम्मको

विप्रेषण आयको प्रभाव :

विप्रेषण आप्रवाहबाट गरिबी र बेरोजगारी घट्दै गइरहेको अध्ययनले देखाएको छ। आर्थिक वर्ष ०५२/५३ मा गरिबीको रेखामुनि रहेका नागरिकहरूको संख्या ४२ प्रतिशत रहेकोमा आर्थिक वर्ष ०७२/७३को अन्त्य सम्ममा यो संख्या २१.६ प्रतिशतमा भरेको छ। अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा कोषका अनुसार विप्रेषण १० प्रतिशतले बढ्दा गरिबी ३ प्रतिशतले घट्दछ। अढाइ दशकको अवधिमा गरिबी ४२ प्रतिशतबाट २० प्रतिशत घटेर अहिलेको स्थितीमा आइपुग्नुमा पनि विप्रेषणकै मुख्य योगदान रहेको छ।

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा योगदान

विश्व बैंकको प्रतिवेदन २०१६ अनुसार विप्रेषणले अर्थतन्त्र थेग्ने मुलुक मध्ये नेपाल विश्वमा तेसो स्थानमा पर्दछ। भ अबैध रूपमा आउने विप्रेषणको योगदान उल्लेख गर्न सकिन्त्यो भने यो अभै वृद्धि हुने देखिन्छ। वैदेशिक रोजगारबाट भित्रिने विप्रेषणको योगदानलाई हेर्ने हो भने पछिल्लो आर्थिक वर्ष ०७२/७३ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ३० प्रतिशत देखिन्छ। जुन कृषिकै योगदान बराबर हो। नेपालले विभिन्न ३५ राष्ट्रबाट विप्रेषण भित्र्याउँछ, जसमध्ये कतारबाट सबैभन्दा बढी २.०२ अर्ब डलर र साउदी अरबबाट १.८ अर्ब डलर भित्रने गरेको छ।

आर्थिक वर्ष २०५०/५१ मा देशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँग कुल गार्हस्थ्य बचतको अनुपात १४.७ प्रतिशत रहेकोमा आर्थिक वर्ष २०७०/७१ मा ११.९ प्रतिशत रहन गएको छ। जब कि आर्थिक वर्ष २०५०/५१ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँग कुल राष्ट्रिय बचतको अनुपात १६.९ प्रतिशत रहेकोमा आर्थिक वर्ष २०७०/७१ मा उक्त अनुपातमा उल्लेख्य वृद्धि भई ४५.७ प्रतिशत पुगेको छ। यसरी कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँग कुल राष्ट्रिय बचतको अनुपात उल्लेख्य रूपमा बढ्नुमा विप्रेषण आयको महत्वपूर्ण भूमिका रहन गएको छ। आर्थिक वर्ष २०५०/५१ मा विप्रेषण आयको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँगको अनुपात १.७४ प्रतिशत रहेकोमा आर्थिक वर्ष २०७०/७१ मा २७.७ प्रतिशत रहेको छ। यसैगरी, आर्थिक वर्ष २०७१/७२ मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँग कुल गार्हस्थ्य बचतको अनुपात, कुल राष्ट्रिय बचतको अनुपात र विप्रेषण आप्रवाहको अनुपात क्रमशः ११.७ प्रतिशत, ४१.७ प्रतिशत र २९.१ प्रतिशत रहेको छ।^१

विप्रेषण प्राप्तिकर्ता परिवार

पछिल्लो आर्थिक वर्षहरूमा सय घरपरिवारमध्ये ५८ घरधुरीमा विप्रेषण भित्रिने गरेको छ। सन् २०१०/११ मा यस्तो दर ५५.८ घरधुरीमा थियो भने सन २००३/४ को दशकमा ३१.९ प्रतिशत घरधुरीमा विप्रेषण भित्रिएको देखिन्छ। त्यस्तै १९९५ /९६ मा मात्र २३.४ प्रतिशत घरधुरीमा विप्रेषण भित्रिएको देखिन्छ। यसमा भारतबाट आउने विप्रेषणलाई समावेश गरिएको छैन।

नेपाल श्रम शक्ति सर्वेक्षण, २००८ अनुसार २३ प्रतिशत घरपरिवारले विदेशी मुलुकबाट विप्रेषण प्राप्त गर्ने गरेका छन् भने कुल विप्रेषण आप्रवाहमा भारतबाट प्राप्त हुने विप्रेषणको अंश १३.४ प्रतिशत रहेको छ। त्यसैगरी, नेपाल जीवनस्तर सर्वेक्षण ०११ अनुसार घरपरिवारको कुल आम्दानीमा विप्रेषणको अंश

१७ प्रतिशत रहेको छ भने विप्रेषण प्राप्त गर्ने घरपरिवारको कुल आम्दानीमा विप्रेषण आयको अंश ३१ प्रतिशत रहेको छ । तराईमा प्रत्येक तीन मध्ये दुई घरपरिवारले विप्रेषण आय प्राप्त गर्ने गरेका छन् भने पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रमा प्रत्येक दुईमा एक घरपरिवारले विप्रेषण रकम प्राप्त गर्ने गरेका छन् साथै, तराई क्षेत्रमा भित्रिने विप्रेषण आय पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रको तुलनामा २.५ गुण बढी रहेको छ । वैदेशिक रोजगारीमा गएका व्यक्तिहरूले वार्षिक औसत ६.२ पटक घरपरिवारका सदस्यहरूलाई रकम पठाउने गरेको देखिन्छ । उनीहरूले वार्षिक रूपमा न्यूनतम १ पटकदेखि अधिकतम २४ पटकसम्म पठाउने गरेको पाइएको छ । विप्रेषण आय पठाउनेले सबैभन्दा बढी अर्थात २७.८ प्रतिशत व्यक्तिहरूले वर्षमा ४ पटक, २०.६ प्रतिशतले वर्षको १२ पटक, १५ प्रतिशतले वर्षको ३ पटक तथा १२.५ प्रतिशतले वर्षको ६ पटक रकम पठाउने गरेको देखिन्छ । सामान्यतः कम आम्दानी हुनेले थोरै पटक र बढी आम्दानी हुनेले धेरै पटक रकम पठाउने गरेको देखिएको छ । (स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, विप्रेषण प्राप्त गर्ने घरपरिवारको बचत तथा लगानी प्रवृत्ति अध्ययन)

विप्रेषणको उपयोग

नेपालमा विप्रेषण आप्रवाहको ठूलो हिस्सा शिक्षा, स्वास्थ्य लगायत उपभोगमा खर्च हुने गरेकाले विप्रेषण आयको भूमिका गरिबी निवारण तथा जीवनस्तर सुदृढीकरणमा सहयोगी बनेको देखिएको छ । खासगरी, नेपाल जीवनस्तर तेस्रो सर्वेक्षण (२०११) का अनुसार घरपरिवारले प्राप्त गर्ने विप्रेषण मध्ये ७९ प्रतिशत रकम घरायसी उपभोगमा, ७ प्रतिशत ऋण तिर्न, ४ प्रतिशत शिक्षामा र ५ प्रतिशत घरायसी सम्पत्ति खरिदमा प्रयोग गरेको देखिएको छ । नेपाल राष्ट्र बैंकले २००४ मा गरेको अध्ययनअनुसार पनि विप्रेषण आयको करिव ८० प्रतिशत उपभोग तथा घरजग्गा खरिदमा प्रयोग भएको देखिएको छ भने ३.९ प्रतिशत विप्रेषण आय मात्र बचत गरेको पाइएको छ । नेपाल राष्ट्र बैंकले गरेको अर्को अध्ययनअनुसार विप्रेषणबाट प्राप्त आम्दानीको ३१ प्रतिशत खाद्यान्य खरिदमा मात्र खर्च भएको छ भने विप्रेषण प्राप्त गर्ने घरपरिवारले अन्य घरपरिवारको तुलनामा शिक्षा, स्वास्थ्य जस्ता मानव संशाधनको विकासमा गर्ने खर्च उच्च देखिएको छ ।

विप्रेषण आयको प्रयोग ऋण तिर्न २५.३ प्रतिशत, दैनिक उपयोगको लागि २३.९ प्रतिशत, शिक्षा, स्वास्थ्यमा ९.७ प्रतिशत, सामाजिक कार्यको लागि ३ प्रतिशत, उत्पादनमूलक कार्यहरूमा १.१ प्रतिशत र बचत कार्यको लागि २८ प्रतिशत हुने गरेको नेपाल राष्ट्र बैंकको अध्ययनले देखाएको छ ।

विप्रेषणमा देशगत योगदान :

कुल विप्रेषणमा कतार, साउदी अरेयिबा, यूएई र कुबेतको योगदान : ५३.१ प्रतिशत

मलेसियाको योगदान : १४.६ प्रतिशत

अन्य मुलुकको योगदान : ३२.३ प्रतिशत

वैदेशिक रोजगार प्रवृद्धन बोर्ड

वैदेशिक रोजगारको सिलसिलामा आर्थिक वर्ष २०६५/६६ देखि २०७२/७३ सम्म विदेशमा निधन भएका ५ हजार ३ सय २८ पुरुष र १ सय १६ जना महिला गरी ५ हजार ४ सय ४४ जना मृतकका परिवारलाई ९२ करोड ५६ लाख ६९ हजार रुपैयाँ आर्थिक सहायता रकम सरकारले उपलब्ध गराएको

छ। आव २०७३/७४ को पहिलो द महिनामा ३ सय द पुरुष र ७ जना महिला गरी जम्मा ३१५ जना मृतकका परिवारलाई आर्थिक सहायता रकम ९ करोड ४० लाख १५ हजार रुपैया वितरण भएको छ।

मृतकको संख्या र आर्थिक सहायताको वितरण

| आर्थिक वर्ष | पुरुष | महिला | जम्मा | रकम (हजारमा) |
|-------------|-------|-------|-------|--------------|
| २०६५/६६ | ७५ | ३ | ७८ | ७,७०९ |
| २०६६/६७ | ४०० | १९ | ४१९ | ३८,९७७ |
| २०६७/६८ | ५५८ | ८ | ५६६ | ४९,५४३ |
| २०६८/६९ | ६३३ | १४ | ६४७ | ७७,१९५ |
| २०६९/७० | ७११ | ११ | ७२२ | ९७,९३० |
| २०७०/७१ | ८५२ | २४ | ८७६ | १,२०,४६० |
| २०७१/७२ | १००० | ६ | १००६ | २,१७,८९० |
| २०७२/७३ | ७९१ | २४ | ८१५ | २,२१,९५० |
| २०७३/७४ | ३०८ | ७ | ३१५ | ९४,०९५ |

स्रोत : वैदेशिक रोजगार मन्त्रालय

विरामी र अंगभंगको विवरण :

| आर्थिक वर्ष | पुरुष | महिला | जम्मा | रकम (हजारमा) |
|-------------|-------|-------|-------|--------------|
| २०६५/६६ | ८ | ० | ८ | २४५ |
| २०६६/६७ | ८ | २ | १० | १६४ |
| २०६७/६८ | ३१ | ० | ३१ | १,४२२ |
| २०६८/६९ | ५५ | २ | ५७ | ३,३७१ |
| २०६९/७० | ८७ | ३ | ९० | ६,२१२ |
| २०७०/७१ | १०८ | ८ | ११६ | ७,५५९ |
| २०७१/७२ | १७९ | ४ | १८३ | १६,६५० |
| २०७२/७३ | १११ | ५ | ११६ | १४,२८४ |
| २०७३/७४ | १०६ | १ | १०७ | १५,८९१ |

.हालसम्म श्रम स्वीकृति दिइएको संख्या :

पुरुष : ४४ लाख ५३ हजार ९ सय २१

महिला : १ लाख ६९ हजार ८ सय ५९

कुल श्रम स्वीकृति संख्या : ४६ लाख २३ हजार ७ सय ८० पटक

पासपोर्ट बनाउने कुल नागरिकको संख्या :

हस्तलिखित पासपोर्ट बनाउने नागरिकहरूको वास्तविक विवरण कतै उपलब्ध छैन । तर, सन् २०१० यता मेसिन रिडेवल पासपोर्ट अनिवार्य भएपछि त्यस्तो बनाउने वा नवीकरण गर्नेहरूको संख्या जनवरी २०१७ सम्म तपसिल बमोजिम रहेको छ ।

कुल एमआरपी बनाउनेहरूको संख्या : ४६ लाख ९४ हजार ५८७

नयाँ एमआरपी बनाउनेहरूको संख्या : २७ लाख ४८ हजार २६४

नवीकरण गर्नेहरूको संख्या : १७ लाख ६० हजार ४५१

हराएको भनि पासपोर्ट बनाउनेहरूको संख्या : १ लाख ८५ हजार ८७२

यात्रा अनुमतिपत्र बनाउनेहरूको संख्या : १२६१

लैगिक रूपमा पासपोर्ट बनाउनेहरूको संख्या

पुरुष : ३९ लाख २५ हजार ०२७

महिला : ७ लाख ६९ हजार ५४२

अन्य : १८

निकायगत रूपमा पासपोर्ट बनाउनेहरूको संख्या

जिल्ला प्रशासन कार्यालयबाट : २१ लाख ५६ हजार १८३

राहदानी विभागबाट : १८ लाख ८० हजार १९९

कुटनीतिक नियोगबाट : ६ लाख ५८ हजार २०५

वैदेशिक रोजगार र अन्य प्रयोजनमा देश बाहिर रहेका महिलाहरूको संख्या :

वैदेशिक रोजगारीको लागि अन्तिम श्रम स्वीकृति लिने महिलाहरूको संख्या :

कुल: १ लाख ६९ हजार ८ सय ५९

एमआरपी लागू भएको २०१० देखि : १ लाख ३१ हजार

अध्ययनका लागि नो अब्जेक्सन लेटर लिनेहरूको अधिकतम संख्या : ८० हजार

डिपेन्डेन्ट, भिजिट, विजनेस भिषामा देश बाहिर जाने महिलाहरूको संख्या करिब ३०

श्रम सम्झौता:

श्रम सम्भौताको अवधि सकिएका देशहरू :

बहराईन २००८, कतार २००५, युएई २००७, कोरिया २००७, जापान २००९

श्रम सम्भौता कायम रहेको देश : कतार,

द्विपक्षीय समभदारी मात्र भएका देशहरू : दक्षिण कोरिया र ईजरायल (केयर गिभरको मात्रै)

वैदेशिक रोजगारका समस्याहरू

प्रस्थान देशमा उत्पन्न हुने समस्या :

नेपालबाट वैदेशिक रोजगारमा जाने नागरिकहरूको मुख्य समस्या भनेको उनीहरूले सरकारले तोकेको लागत मूल्यमा जान नपाउनु नै हो । त्यसैगरि अवैध विधि र मार्गबाट लैजाने (खासगरि महिलाहरूलाई र ईराक अफगानिस्तान जस्ता देशमा पुरुषहरूलाई), आकर्षक रोजगारीको प्रलोभन देखाएर अधिकतम रकम ठग्ने, रकम उठाएर भाग्ने वा बीचैमा लगेर अलपत्र छोडिदिने जस्ता समस्या चुनौतीको रूपमा देखिएका छन् । म्यानपावर कम्पनीहरूले नक्कली तलब, सेवा, सुविधाका करार पत्र बनाएर पठाउने, त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल र अध्यागमनबाटै सेटिङमा कामदार पठाउने, वैदेशिक रोजगार विभाग तथा माताहतका कार्यालयमा अत्याधिक घुसखोरी हुने, पीडकलाई दण्डित नगरिने अथवा ढिलो गरिने अथवा कम दण्डित गरिने, पीडितले तत्काल न्याय नपाउने लगायतका समस्या छन् ।

चको शुल्क, समयमा उडान नगर्ने, करारपत्र र अन्य कागजात नदिनु वा ढीलो दिन, बाटामा पाउने दुखलगायतका अन्य समस्या पनि छन् ।

गन्तव्य देशमा समस्या

विशेषगरी गन्तव्य देशमा नेपालबाट गरेर गएको करारपत्र बमोजिम काम, तलब तथा सेवा सुविधा नपाउने मुख्य समस्या छ । सोही समस्याका कारण श्रमिकहरू कम्पनी छोड्न बाध्य हुने गरेका छन् भने कतिपय अवस्थामा कम्पनीसँग झगडा, हडताल र विरोधमा समेत उत्रने गरेका छन् । जुन गन्तव्य देशका कानुनद्वारा बर्जित गरिएका क्रियाकलापहरू मानिएको छ । आपराधिक क्रियाकलापमा संलग्नता, संस्कृतिको अपमान आदिका कारण सयौ नागरिकहरू मृत्युदण्ड, जन्मकैद, कैद सजाय, जरिवाना, कोर्टबाट दण्डित गरिएका छन् । पासपोर्ट खोसिने, नहुने, अकामा वा परिचय पत्र नबनाई दिनेलगायतका समस्याहरू पनि उत्तिकै रहेका छन् । हाम्रा नागरिकहरूको गन्तव्य देशमा मृत्यु हुने, अंगभंग हुने, गम्भीर प्रकृतीका बिरामी हुने संख्या पनि बढ्दो क्रममा रहेको छ । त्यस्तै, यौनशोषण, श्रमशोषण, शारीरिक तथा मानसिक यातना पाउनेहरूको संख्या पनि बढ्दो क्रममा रहेको छ ।

अलपत्र पर्ने वा अवैध रूपमा जाने वा बस्ने, श्रम स्विकृती नलिई जाने, बीमा तथा श्रम स्वीकृति फेल हुने लगायतका सयौ समस्या देखिएका छन् ।

समग्रमा गन्तव्य देशमा हाम्रा नागरिकहरूको सुरक्षा र सुविधाको अवस्था चिन्ताजनक रूपमा देखिएको छ ।

वैदेशिक रोजगार सुरक्षित व्यवस्थित र मर्यादित बनाउन भएका निर्णय

वैदेशिक रोजगारमा गएका नेपाली कामदारको बीमा सुविधानमा विस्तार गरी कामदारको स्वास्थ्य बीमा तर्फ साविकको सुरक्षा तथा सुविधालाई विस्तार गरी जीवन बीमा, आयको नोक्सानी लगायतका सुविधाहरूका अतिरिक्त मृगौला फेल, क्यान्सर जस्ता विभिन्न १५ प्रकारका घातक रोग बापत थप ५ लाख रुपैया बीमाङ्क बराबरको नयाँव्यवस्था गरिएको छ। सो व्यवस्थापछि कामदारले सम्बन्धित बीमा कम्पनीबाट २० लाख रुपैयाँसम्म बीमा रकम पाउन सक्नेछन्। सो व्यवस्था २०७३ फागुन १ गतेबाट लागु भएको छ।

वैदेशिक रोजगारको क्रममा दुर्घटनामा परि उपचार गर्न वा जीवन गुमाउने नेपाली कामदारलाई दिईने आर्थिक सहायता साविक रु ३ लाखमा ४ लाख वृद्धि गरी ७ लाख पुऱ्याउने सरकारले घोषणा गरेको छ। यसरी थप हुँदा २७ लाख रुपैयाँसम्म पुगेको छ।

मृगौला फेलर, क्यान्सर जस्ता विभिन्न १५ प्रकारका घातक रोग लागेमा तत्काल क्षतिपूर्ति पाउने गरी थप ५ लाखको बीमा हुने व्यवस्था मिलाईएको छ। साथै तीन महिना भित्र मानसिक रोगलाई समेत घातक रोगको सूची भित्र समावेस गरि क्षतिपूर्ति दिलाउने सम्बन्धमा आवश्यक गृहकार्य गर्न समेत बीमा समितीलाई निर्देशन दिईएको छ।

घातक रोग लागी मृत्यु नभएको तर शारीरिक रूपले मृत्यु सरह मानिने अवस्था प्रमाणित भएमा किया खर्च र शव ल्याउने खर्च बाहेक बीमाबाट १३ लाखसम्म, वैदेशिक रोजगार प्रवर्द्धन बोर्डबाट ३ लाख र घातक रोग बापत ५ लाख गरी कुल १८ लाख सम्म प्राप्त हुनेछ।

अस्वस्थताको अवस्थामा घातक रोग अन्तर्गतको तत्काल पाइने बीमा दाबी व्यवस्था गरिएको छ। अब नयाँ व्यवस्था अनुसार घातक रोग प्रमाणित भएमा बीमाबाट प्राप्त हुने सबै रकम बीमीतले तत्काल पाउन सक्नेछन्। यसरी प्राप्त हुने रकमले बिरामीलाई उपचार गराउन सहयोग पुग्नेछ।

बीमाबाट कामदारले पाउने रकमको शीर्षकहरू :

जीवन बीमा बापत : रु. १० लाख

बीमितको आयको नोक्सानी बापत : रु. २ लाख

किया खर्च बापत : रु १ लाख

औषधी उपचार खर्च बापत : रु १ लाख सम्म

शव ल्याउन खर्च बापत : रु. १ लाख

घातक रोग बापत : रु ५ लाख

कूल रकम : रु २० लाख सम्म

यस अधि नै बीमा गरि सकेका तर म्याद नसकिएका नागरिकहरूले घातक रोग र बीमाको पछिल्लो व्यवस्था बमोजिम रक्षावरणको सुविधा लिन चाहेमा समानुपातिक थप शुल्क बुझाएर लिन सकिने व्यवस्था गरिएको छ ।

मिति २०७३/ १०/ ११/ देखि २०७४/ ०१/११ सम्म वैदेशिक रोजगारीमा रहेका कुनै नागरिकको बीमा नविकरण नहुदै मृत्यु, अंग भंग वा विरामी लगायत बीमा दावी गर्न योग्य क्षति पुगे बीमाले स्वतः रक्षावरण गर्नेछ । यो व्यवस्थाले विदेशमा रहेका सम्पूर्ण नेपाली कामदारलाई तत्काल आर्थिक सुरक्षा मिल्ने अपेक्षा गरिएको छ ।

वैदेशिक रोजगार प्रबद्धन बोर्ड स्थापना भएयता मृत्यु भएका ७० जना र अन्यलाई गरि बोर्डबाट कम्तिमा ३ करोड ३२ लाख रकम क्षतिपुर्ति तथा राहत वितरण गरिएको छ । जबकी कोरिया जाने कामदारबाट कल्याणकारी कोषमा हाल सम्म ४ करोड २१ लाख मात्र सहभागिता भएको छ । यस्तो सहभागिता प्रति व्यक्ति एक हजारको दरले हुन्छ र यो वार्षिक सरदर ६०/७० लाख मात्रै हुन्छ (दक्षिण कोरिया जाने नागरिकहरूको वार्षिक संख्या ६/७ हजार हुने गरेको आधारमा) । तर, बोर्डले वार्षिक करिब एक करोड सम्म राहत तथा क्षतिपुर्ति वितरण गरि रहेको छ । यसबाट अबको केहि समय पछि कोरिया गएका नागरिकहरूको शब्द ल्याउन पनि खाडि तथा मलेसिया गएका नागरिकहरूले जनाएका सहभागिता रकम पठाउनु पर्ने हुन सक्छ ।

मध्यपूर्वमा काम गर्न जाने नागरिकहरूको करार अवधि २ वर्ष र मलेसिया जाने कामदारहरूको करार अवधि ३ वर्षको हुन्छ । त्यस्तै मध्यपूर्व र मलेसियामा काम गर्न जाने नागरिकहरूको औसत आमदानी २५ हजार प्रति महिना हुन्छ । तर, दक्षिण कोरिया ४ वर्ष १० महिना र ईजरायल जाने कामदारहरूको करार अवधि ५ वर्षको हुन्छ । यी दुवै देशमा काम गर्ने नागरिकहरूको न्यूनतम आमदानी हरेक महिना १ लाख २५ हजार हुन्छ । तर, उनीहरूले कल्याणकारी कोषमा गर्ने सहभागिता भने मध्यपूर्व र मलेसिया जाने नागरिकले गर्ने बराबर नै हुन्छ । यसमा सुधारका प्रक्रिया थालिएका छन् ।

तयारकर्ता: अनिल परियार

कार्यरत संस्था: कान्तिपुर रेडियो

¹ स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, वैदेशिक रोजगार विभाग